CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner

कृषि मंत्री ने 'अमूल हनी' की शुरुआत की; कहा मधुमक्खी पालन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रही सरकार

नरेंद्र सिंह तोमर ने मंगलवार को राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) के साथ मिलकर गुजरात कोआपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमटेड द्वारा विकसित एक नया उत्पाद 'अमूल हनी' बाजार में पेश किया। इस पेशकश के बाद तोमर ने कहा कि सरकार छोटे किसानों की आय दोगुनी करने के लिए मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए करीब 500 करोड़ रुपये बजट रखा गया है।

एक सरकारी बयान में तोमर के हवाले से कहा गया है कि एनबीबी की स्थापना विभिन्न गतिविधियों को संचालित करने के लिए भी की गयी थी। उदहारण के लिए, शहद की गुणवत्ता की जांच के लिए पांच प्रमुख प्रयोशलएं और 100 मिनी शहद परिक्षण प्रयोशलएं स्थापित की जा रही हैं। इसके आलावा, तोमर ने स्थानीय शहद मानकों को सुधारकर वैश्विक स्टार पर लाने और निर्यात को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। सहकारी मॉडल को कृषि क्षेत्र में सफलता की कुंजी बताते हुए तोमर ने कहा कि सहकारी भावना के साथ काम करने से दूध के क्षेत्र में अमूल की तरह बढ़ने में मदद मिलेगी।

अमूल के डॉ. आर. एस. सोढ़ी और जयन मेहता ने प्रतिष्ठित आईएए पुरस्कार जीता

इंटरनेशनल एडवरटाइजिंग एसोसिएशन (IAA) ने GCMMF के एमडी डॉ. आर. एस. सोढ़ी को "बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर" अवार्ड से और GCMMF के सीनियर जीएम (प्लानिंग एंड मार्केटिंग) जयन मेहता को "मार्केटर ऑफ द ईयर" के पुरस्कार से सम्मानित किया है। . एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि वे एफएमसीजी-खाद्य श्रेणी में विजेता बनकर उभरे हैं। IAA नेतृत्व पुरस्कार, जो हर साल विपणन, विज्ञापन और मीडिया के क्षेत्र में व्यक्तियों को सम्मानित करते हैं, समारोह में मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी द्वारा प्रस्तुत किए गए।

पुरस्कार प्राप्त करने के बाद डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने आईएए को धन्यवाद दिया। सोढ़ी ने अमूल अभियान पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि चार Ps हैं; पहला P एक प्रोडक्ट है जहां ग्राहक को यह कहना चाहिए कि यह उसकी अपेक्षाओं से बेहतर था। प्राइस निर्धारण वहनीय होना चाहिए, और किसानों को सर्वोत्तम मूल्य मिलना चाहिए। प्रमोशन के लिए, हमने लागत कम करने के लिए अम्ब्रेला ब्रांडिंग का इस्तेमाल किया। संचार में निरंतरता अमूल विज्ञापन और विपणन रणनीति के लिए मुख्य स्तंभ थी, "उन्होंने चौथे P के रूप में एक पर्टिकुलर प्लेस (विशेष स्थान) की भाषा में रचनात्मक विज्ञापन का उल्लेख करते हुए कहा।

विटामिन ए और डी के साथ टोंड दूध में पोषण जल्द बढ़ाएगा आविन

हाल ही में सभी राज्य-नियंत्रित दूध महासंघों को केंद्र सरकार के निर्देश के बाद आविन दूध उपभोक्ताओं को जल्द ही विटामिन ए और डी के साथ दूध मिल जाएगा। ए और डी विटामिन की कमी के कारण आबादी के गरीब वर्गों में उच्च नेत्र संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए यह कदम उठाया गया है। इसलिए जनसंख्या के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए, राज्य दुग्ध संघों को अपने दूध को दोनों विटामिनों से मजबूत करने का आदेश दिया गया है। सूत्रों ने खुलासा किया कि फुल क्रीम दूध के अलावा, जिसमें पहले से ही ये विटामिन होते हैं, टोंड और पाश्चुरीकृत दूध दोनों विटामिनों से भरपूर होगा।

इस प्रक्रिया में एक लीटर विटामिन कॉन्संट्रेट के साथ 10 लीटर दूध को पतला करना शामिल है, जिसे बाद में लगभग 40,000 लीटर दूध में इस्तेमाल किया जाएगा। कॉन्संट्रेट उत्तर भारत से खरीदा जा रहा था और इसे चेन्नई में मिल्क मेजर फेडरेशन के कार्यालय से जिलों में भेजा जाएगा। जल्द ही, सभी डेयरियों के लिए इन विटामिनों के साथ दूध को पोषित करना बिक्री के लिए वैधानिक बना दिया जाएगा।

महिला आयोग ने की डेयरी फार्मिंग ट्रेनिंग की शुरुआत, महिलाओं को स्वावलंबी बनाना उद्देश्य

ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए, राष्ट्रीय महिला आयोग ने डेयरी फार्मिंग में महिलाओं के लिए एक देशव्यापी प्रशिक्षणऔर क्षमता निर्माण कार्यक्रम शुरू किया है। आयोग डेयरी फार्मिंग और संबद्ध गतिविधियों से जुड़ी महिलाओं की पहचान और प्रशिक्षण के लिए पूरे भारत में कृषि विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग कर रहा है, जैसे कि मूल्यवर्धन, गुणवत्ता वृद्धि, डेयरी उत्पादों की पैकेजिंग और विपणन, व अन्य।

परियोजना के तहत पहला कार्यक्रम हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा में महिला एसएचजी समूहों के लिए 'मूल्य वर्धित डेयरी उत्पाद' पर आयोजित किया गया था।

परियोजना का शुभारंभ करते हुए, एनसीडब्ल्यू की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कहा कि वित्तीय स्वतंत्रता महिला सशक्तिकरण की कुंजी है। परियोजना के माध्यम से एनसीडब्ल्यू का उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने, मूल्यवर्धन, पैकेजिंग और शेल्फ जीवन को बढ़ाने और उनके उत्पादों के विपणन में प्रशिक्षण देकर वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करना है।

आयोग महिलाओं को उनके व्यवसाय को बढ़ाने और उन्हें उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करेगा। एनसीडब्ल्यू ऐसे प्रशिक्षकों का भी चयन करेगा जो महिला उद्यमियों, महिलाओं द्वारा संचालित दुग्ध सहकारी समितियों, महिला स्वयं सहायता समूहों आदि को प्रशिक्षित करेंगे। एनसीडब्ल्यू का लक्ष्य डेयरी क्षेत्र में एक स्थायी और अनुकरणीय जिला स्तरीय मॉडल तैयार करना है जिसे देश के डेयरी फार्मिंग क्षेत्रों में अपनाया जा सकता है।

सहकारी समिति में जल्द होगा संशोधन : केंद्रीय सहकारिता मंत्री

केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि सहकारिता आंदोलन को मज़बूत, पारदर्शी और आधुनिक बनाने के साथ ही इसमें कानूनी संशोधन किया जाएगा ताकि देश के हर नागरिक को सहकारिता का लाभ मिल सके। शाह ने शनिवार को यहां इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में देश के पहले राष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य सहकारिता आंदोलन की प्रासंगिकता को प्रभावी बनाकर प्रत्येक नागरिक की इस आंदोलन तक पहुंच बनाना है और हर व्यक्ति को सहकारिता आंदोलन से जोड़कर उसे इसका सीधा लाभ देना है।

उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को सहकारिता का लाभ मिले, इसके लिए क्रेडिट सोसाइटी बनाने की कार्य योजना पर काम चल रहा है। इससे हर व्यक्ति को छोटी राशि के लिए भी क्रेडिट सुविधा मिल सकेगी।
इस काम के लिए नियम सरल और सुगम बनाकर सहकारिता अधिनियम लाकर सहकारिता क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाया जाएगा।

शाह ने कहा कि सहकारिता आंदोलन की प्रासंगिकता आज भी है और इस मंत्रालय के जरिये इस आंदोलन को नया रूप देने का काम किया जाएगा। उनका कहना था कि सहकारिता से देश की स्थिति में बदलाव आएगा और यह आन्दोलन कितना सफल है इसका उदाहरण अमूल डेरी, लिज़्ज़त पापड़ और केरल की कोआपरेटिव सोसाइटी जैसे कई संगठन है।

स्टार्टअप: छोटे डेयरी किसानों को सुलभ बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए स्टेलैप्स ने एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ सहयोग किया

एक प्रमुख डेयरी-टेक स्टार्टअप, स्टेलैप्स ने छोटे डेयरी किसानों को कैशलेस भुगतान हस्तांतरण को सक्षम करने और देश में डिजिटल वित्तीय समावेशन में योगदान करने के लिए एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ हाथ मिलाया है। स्टेलैप्स अपने mooPay फिनटेक प्लेटफॉर्म के माध्यम से डेयरी किसानों के लिए वित्तीय समावेशन में सुधार के लिए डिज़ाइन किए गए विशेष कार्यक्रमों के साथ, डेयरी मूल्य श्रृंखला में समग्र वित्तीय प्रबंधन कार्यक्रम प्रदान करता है। हालांकि, किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती भुगतान वापस लेने के लिए निकटतम एटीएम या बैंक शाखा तक पहुंचने की लंबी यात्रा थी ।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक अब स्टेलैप्स के नए साझेदार दूध संग्रह केंद्रों को बैंकिंग केंद्रों के रूप में शामिल करेगा। दुग्ध संग्रहण केंद्र बैंकिंग केंद्र के रूप में संचालित होने के कारण, किसानों और आस-पास के अन्य निवासियों को अब लंबी दूरी की यात्रा नहीं करनी पड़ेगी। इन बैंकिंग बिंदुओं के माध्यम से, वे बैंक खाता खोल सकेंगे, नकद निकाल सकेंगे और जमा कर सकेंगे, बचत पर ब्याज अर्जित कर सकेंगे, आधार सक्षम भुगतान प्राप्त कर सकेंगे, सरकारी पेंशन योजनाएं प्राप्त कर सकेंगे और बिल भुगतान कर सकेंगे।

बैंकिंग पॉइंट के रूप में केंद्रों को चरणबद्ध तरीके से जोड़ा जाएगा। इस सहयोग के माध्यम से, दोनों संस्थाओं का लक्ष्य देश भर के दस लाख से अधिक छोटे डेयरी किसानों को औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करना है। पार्टनर इकोसिस्टम को उत्तर प्रदेश (वाराणसी और कानपुर) और मध्य प्रदेश (ग्वालियर) में पायलट किया गया है। 120 से अधिक दूध संग्रह केंद्र अब बैंकिंग पॉइंट के रूप में भी काम कर रहे हैं।

साझेदारी पर बोलते हुए, राहुल मल्लिक, सीईओ - स्टेलप्प्स फिनटेक और वैल्यू-एडेड सर्विसेज कहते हैं, "हम एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ साझेदारी करने के लिए बहुत उत्साहित हैं क्योंकि यह हमारी अपनी सेवा की पेशकश को मजबूत करेगा, दस लाख से अधिक डेयरी किसानों को उनकी बैंकिंग जरूरतों के साथ मदद करेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देगा। प्रभावी रूप से वित्तीय समावेशन और समृद्धि साथ-साथ चलती है। अपने नेटवर्क और पार्टनर डेयरियों के माध्यम से स्टेलैप्स किसानों को सीधे भुगतान, क्रेडिट और बीमा को सक्षम कर रहा है और एयरटेल पेमेंट्स बैंक की सहायता से ऐसे उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध होंगी जिनमें किसान उत्पादकता को और बढ़ाने की क्षमता है और उन्हें आगे नवाचार और समृद्ध करने के लिए वित्तीय अवसर प्रदान करते हैं।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक के मुख्य परिचालन अधिकारी, श्री गणेश अनंतनारायणन ने कहा, "छोटे डेयरी किसानों के लिए कैशलेस भुगतान हस्तांतरण को सक्षम करने के लिए हमें स्टेलैप्स के साथ साझेदारी करके खुशी हो रही है। प्रत्यक्ष भुगतान किसानों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में मदद करता है। हमारा अनूठा और व्यापक वितरण नेटवर्क हमें इन किसानों को औपचारिक बैंकिंग के लाभ प्रदान करने की अनुमति देता है। इस पहल की प्रारंभिक सफलता ने हमें इसे राष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह सभी के लिए वित्तीय समावेशन के हमारे घोषित विचार के अनुरूप है।"

CEDSI ने शुक्रवार 1 अक्टूबर को छात्रों के लिए एक वेबिनार का आयोजन किया

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डेयरी स्किल्स इन इंडिया ने कृषि और डेयरी क्षेत्रों के छात्रों के लिए करियर-टॉक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार का विषय 'कृषि और डेयरी क्षेत्र में प्रतिमान बदलाव के साथ करियर के अवसर' था। डॉ. जे. बी. प्रजापति, अध्यक्ष, वीकेसीओई, ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनंद, डॉ. एम. के. झाला, अनुसंधान और डीन पीजी स्टडीज, आनंद कृषि विश्वविद्यालय और श्री सतीश कुलकर्णी, उपाध्यक्ष, इंडियन डेयरी एसोसिएशन वेबिनार में वक्ता थे। वेबिनार मुख्य रूप से उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार दोनों क्षेत्रों में वर्तमान और आगामी नौकरी के अवसरों पर केंद्रित था। भारत भर के विभिन्न कृषि और डेयरी विश्वविद्यालयों / कॉलेजों के लगभग 180 छात्र वेबिनार में शामिल हुए।

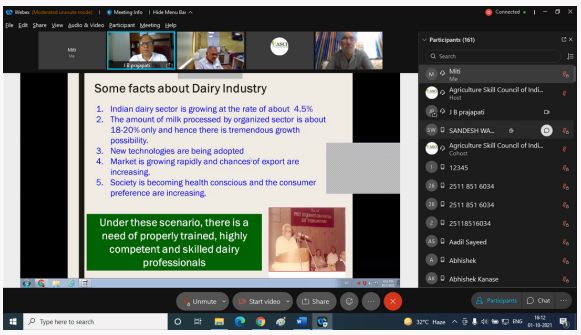

रांची के गोपालकों के बीच गुजरात के गिर गायों को पालने का बढ़ा प्रचलन, दूध के बेमिसाल फायदे

झारखंड की राजधानी रांची में गोपालन और डेयरी के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में नयी क्रांति देखने को मिल रही है। आम तौर पर देसी गाय, फ्रीजन और साहिवाल गाय पाली जाने वाली रांची में अब गुजरात के गिर गायों को पालने का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। कोरोना काल में यहां के गोपालकों में गिर गायों को पालने की ललक बढ़ी है। हालांकि गिर गाय महंगी होने की वजह से कम ही लोग इसे पालने की हिम्मत जुटा पाते हैं। रांची के धुर्वा डैम इलाके में सैंबो के निवासी मिथिलेश कुमार ने 65 गिर गायों को पाला है। उनकी मानें तो वर्ष 2016 में उन्होंने गुजरात से 20 गिर गायों को मंगवाया था, लेकिन अब उन गायों की संख्या बढ़कर 65 हो गयी है। दरअसल रांची में कुछ बड़े गोपालक अपने फार्म हाउस में गिर गायों का प्रजनन भी कराते हैं। इन गिर गायों की कीमत 80 हजार से लेकर सात लाख रुपये तक होती है।

स्थानीय बाजारों में इनका दूध 150 रुपये प्रति लीटर के भाव से बिकता है। गोपालक कोमल किशोर बताते हैं कि गिर गाय एक दिन में लगभग नौ किलो दूध देती है। इनकी दूध में पौष्टिकता के साथ-साथ शरीर में इम्यूनिटी सिस्टम को बढ़ाने की ताकत है। हालांकि वो मानते हैं कि शांत और दोस्ताना स्वभाव की गिर गायों को पालना थोड़ा मुश्किल होता है। इसकी वजह है कि इन्हें पालने के दौरान साफ-सफाई, वैक्सीनेशन और खान-पान का विशेष ध्यान रखता होता है। गिर गाय देखने में काफी खूबसूरत और तंदुरूस्त होती है। हालांकि जिनके पास गिर की ऊंचे नस्ल की नंदी होती है वो अपने फार्म हाउस में उन्नत नस्ल की गायों का प्रजनन भी कराने में सफल होते हैं।

विश्व हृदय दिवस: मदर डेयरी ने युवाओं में हृदय स्वास्थ्य पर एक वीडियो के माध्यम से जागरूकता फैलायी

मदर डेयरी की एक डिजिटल फिल्म इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि आज के वयस्क, विशेष रूप से 40 वर्ष से कम आयु के, हृदय रोगों की चपेट में हैं। और किसी की दिनचर्या में एक स्वस्थ सकारात्मक बदलाव लाने की वकालत करता है। अपने 'ज़रा सा बदला' ब्रांड के विचार पर खरा उतरते हुए, मदर डेयरी के भारत के प्रमुख खाद्य तेल ब्रांड, धारा ने विश्व हृदय दिवस 2021 के अवसर पर एक डिजिटल फिल्म शुरू की है, जिसमें विशेष रूप से 40 साल के युवा भारतीय में हृदय स्वास्थ्य के महत्व की वकालत की गई है।

फिल्म हृदय स्वास्थ्य की कुंजी के रूप में शारीरिक व्यायाम, तनाव कम करने और दैनिक आहार में ओरिजनॉल के सेवन को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता को इंगित करती है। यह एक खतरनाक संदेश भी साझा करता है कि भारतीय पुरुषों में 25% दिल के दौरे 40 वर्ष से कम उम्र के होते हैं, जिन्हें जनता के बीच अधिक जागरूकता की आवश्यकता होती है।

इस पहल के बारे में दिनेश अग्रवाल, बिजनेस हेड-धारा, मदर डेयरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्रा. लिमिटेड ने कहा, "आधुनिकजीवन के पाठ्यक्रम ने हमारी जीवन शैली में विभिन्न विसंगतियों को जन्म दिया है और पिछले दो वर्षों की घटनाओं ने दुर्भाग्य से इसे और बढ़ा दिया है। धारा ने हमेशा स्वस्थ जीवनशैली प्रथाओं जैसे कि संयम में तेल का उपयोग और शारीरिक व्यायाम की दिनचर्या को अपनाने का प्रयास और समर्थन किया है।"

धारवाड़ भैंस भारत में प्रसिद्ध स्वदेशी मवेशियों के हॉल ऑफ फेम में शामिल हुई

धारवाड़ भैंस को एक नई उपलब्धि मिली है क्योंकि इसे हाल ही में आईसीएआर-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा राष्ट्रीय मान्यता दी गई है। भैंस की इस स्वदेशी किस्म का अब एक परिग्रहण कोड संख्या है - INDIA_BUFFALO_0800_DHARWADI_01018। इसके बाद, इस नस्ल पर आगे के शोध और अध्ययन के लिए कोड का उपयोग किया जाएगा।

“धारवाड़ की भैंसें सैकड़ों वर्षों से हैं। यह इस क्षेत्र के लिए स्वदेशी है, ”पशुपालन विभाग के प्रमुख वीएस कुलकर्णी ने कहा। कुलकर्णी ने कहा, "हम भैंसों की इस नस्ल के लिए मान्यता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, जो मान्यता के योग्य है, और अंत में नेशनल ब्यूरो ऑफ एनिमल जेनेटिक रिसोर्सेज ने इसे स्वीकार किया।"